साइकिलों पर सवार महिलाएं

अरविन्द गुप्ता
इशिता धारप

साइकिलों पर सवार महिलाएं

अरविन्द गुप्ता
इशिता धारप

गरीब लोगों के पत्रकार
श्री पी साईनाथ को समर्पित

यह पुस्तक सर रतन टाटा ट्रस्ट के
आर्थिक अनुदान के तहत
विकसित हुई।

लेखनः अरविन्द गुप्ता
चित्रः इशिता धारप

शीला रानी चुनकठ

शीला रानी चुनकठ : एक युवा, कर्मठ, गरीबों की हितैशी महिला आईएएस अफसर हैं। वो पुदुकोट्टाय जिले की कलैक्टर हैं और जिला साक्षरता समिति की अध्यक्ष हैं। वो साक्षरता मिशन में साइकिल सीखना जोड़ती हैं।

विजया

विजया : एक दबंग युवती है जो गरीबी के कारण शिक्षा पूरी नहीं कर पाती है। उसके इरादे पक्के हैं और वो जो ठीक समझती है वही करती है।

अमीना

अमीना : विजया की बचपन से प्रिय मित्र है। वो साहसी और कुशल है। पारम्परिक परिवार में शादी होने के बाद वो अब अपनी बेड़ियां तोड़कर उड़ने को तैयार है।

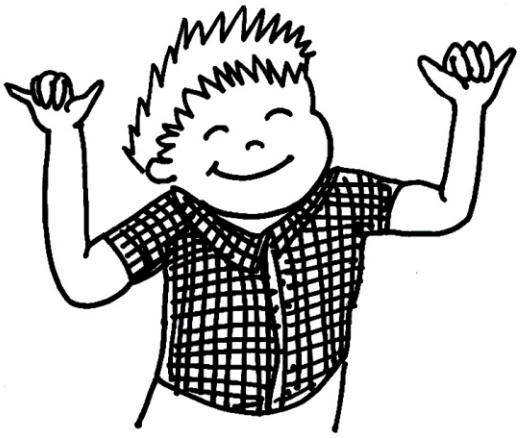

रवि

रवि : विजया का छोटा भाई है। वो हमेशा कुछ शैतानी और खुराफात करता रहता है। वो जिज्ञासू है और पेड़ों पर चढ़कर पुदुकोट्टाय में होने वाली नवीनतम घटनाओं से खुद को अवगत रखता है। वो प्यार और बड़े काम का लड़का है।

हमारी कहानी की शुरुआत 1991 में होती है।

रवि विजया का छोटा भाई है। वो नौ साल का है और हमेशा कुछ न कुछ मस्ती करता रहता है। पर आज विजय को कुछ दाल में काला लगा। क्या कोई दुर्घटना हुई? उसे कुछ अटपटा लगा।

अमीना, विजया की मित्र थी।

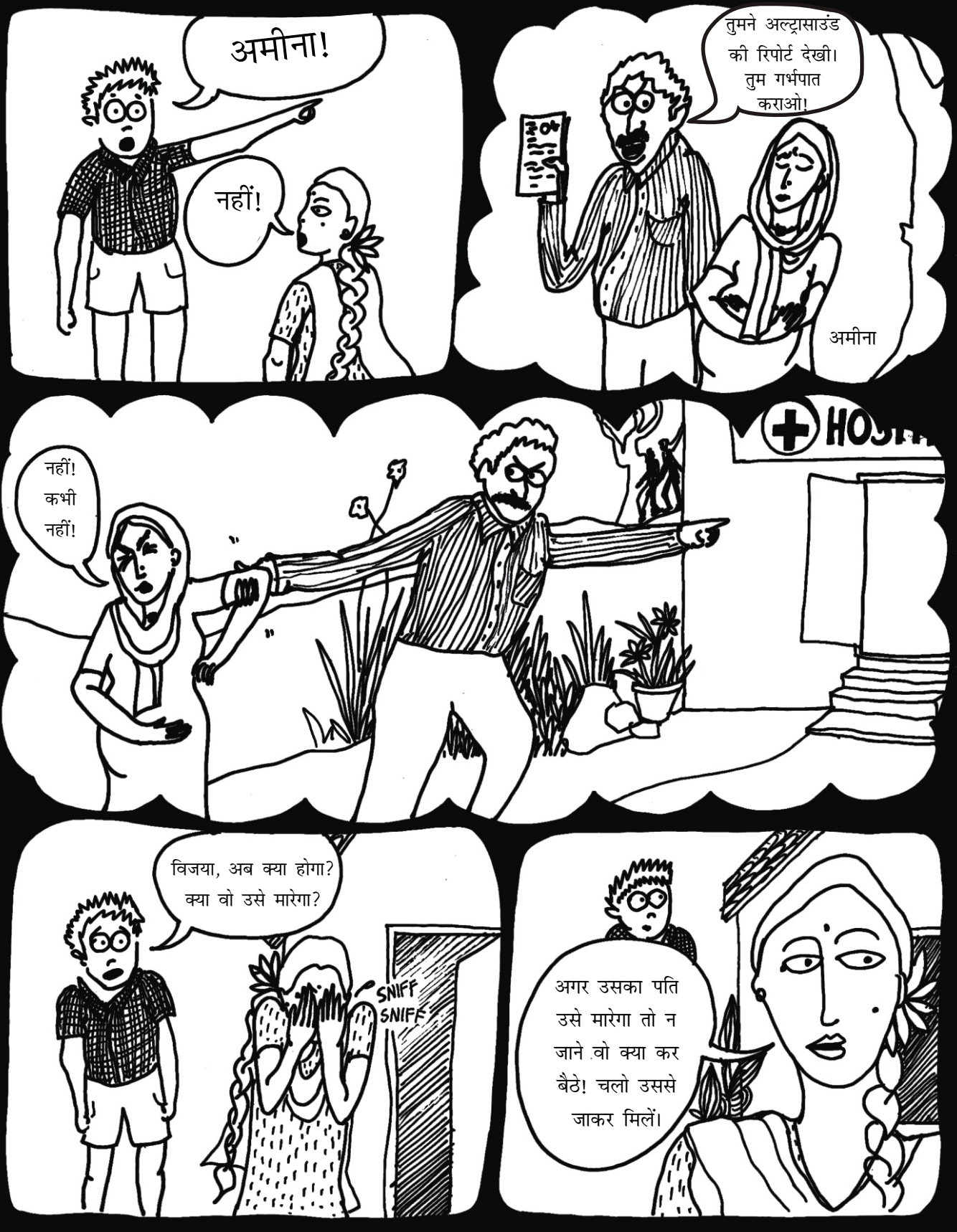

विजया और रवि जल्दी से अमीना के घर पहुंचे।

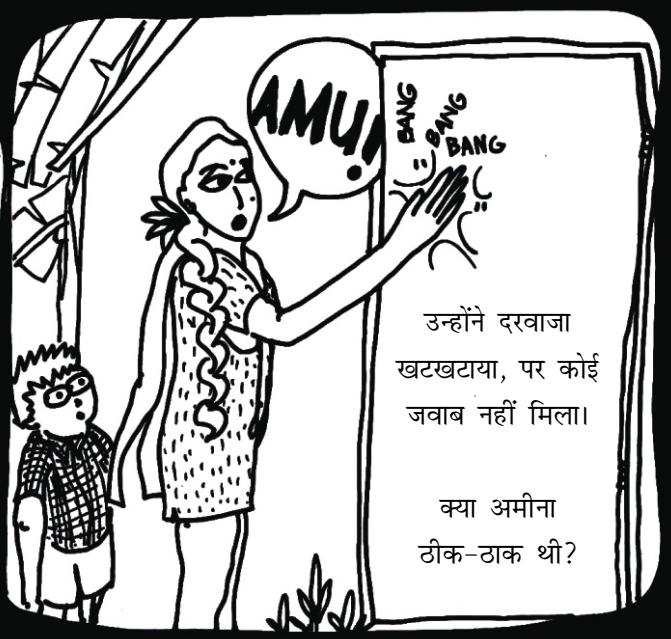

उन्होंने दरवाजा खटखटाया, पर कोई जवाब नहीं मिला।

क्या अमीना ठीक-ठाक थी?

नवजात बच्चों का गर्भ में लिंग मालूम करने का जिले में प्रचलन था।

नवजात लड़कियों की भ्रूण हत्या एक आम बात थी।

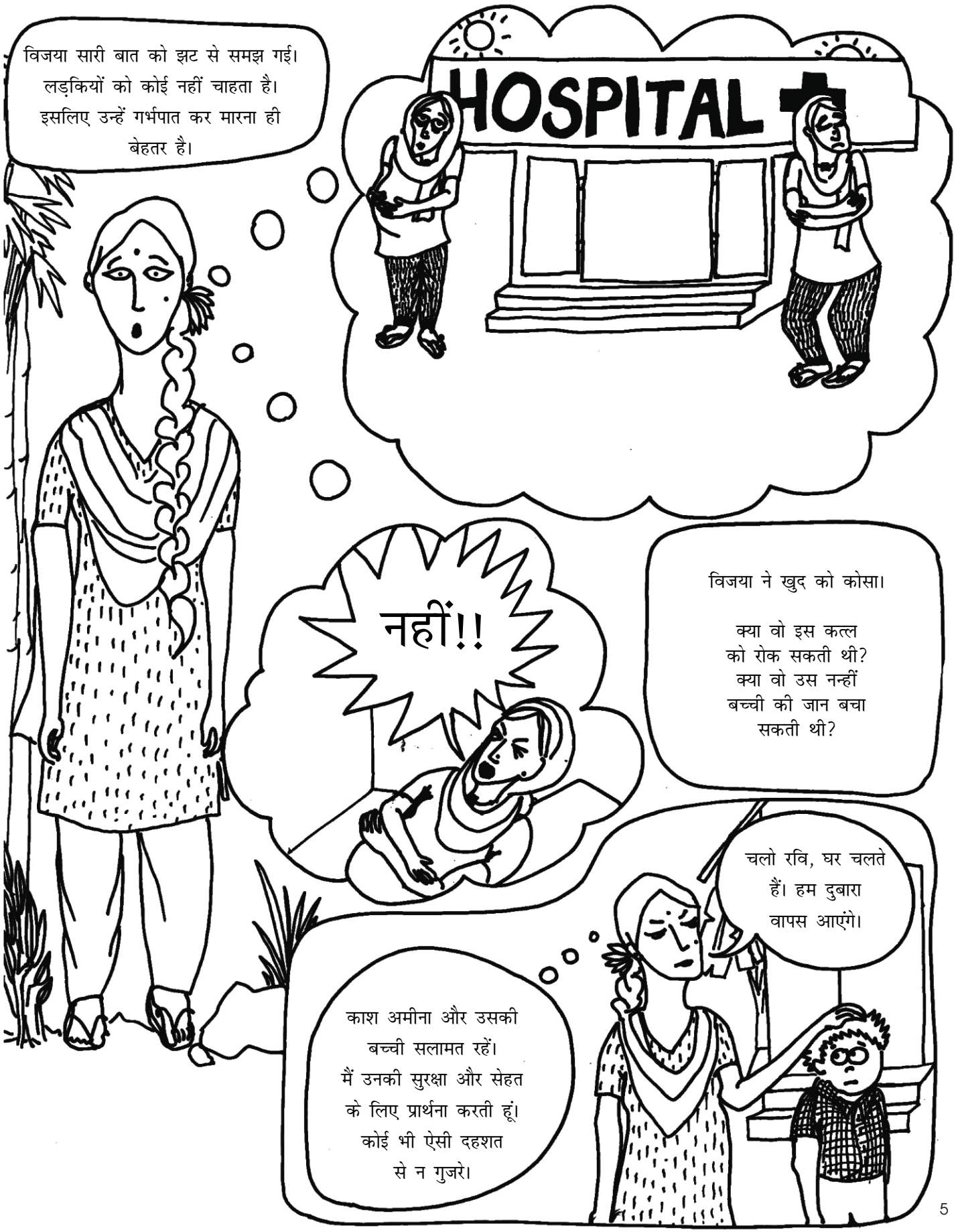

विजया सारी बात को झट से समझ गई। लड़कियों को कोई नहीं चाहता है। इसलिए उन्हें गर्भपात कर मारना ही बेहतर है।
HOSPITAL
नहीं!!
विजया ने खुद को कोसा।
क्या वो इस कत्ल को रोक सकती थी? क्या वो उस नन्हीं बच्ची की जान बचा सकती थी?
चलो रवि, घर चलते हैं। हम दुबारा वापस आएंगे।
काश अमीना और उसकी बच्ची सलामत रहें। मैं उनकी सुरक्षा और सेहत के लिए प्रार्थना करती हूं। कोई भी ऐसी दहशत से न गुजरे।

जैसा की हरेक पैतृक व्यवस्था में होता है पुदुकोट्टाय में भी महिलाओं के अधिकारों, समता, शिक्षा और आजादी को कुचला जा रहा था। लड़कियों की शिक्षा किसी की प्राथमिकता नहीं थी। लड़की का मतलब था - दहेज और कर्ज। समान काम के लिए महिलाओं को पुरुषों से कम मजदूरी मिलती। वे 'अभागे' लिंग की थीं।
लड़की की नियति पुरुष तय करते - पिता, भाई और पति। जन्म से मृत्यु तक महिलाएं भय और शोषण की जिंदगी जीती थीं।
खीरे
आलू

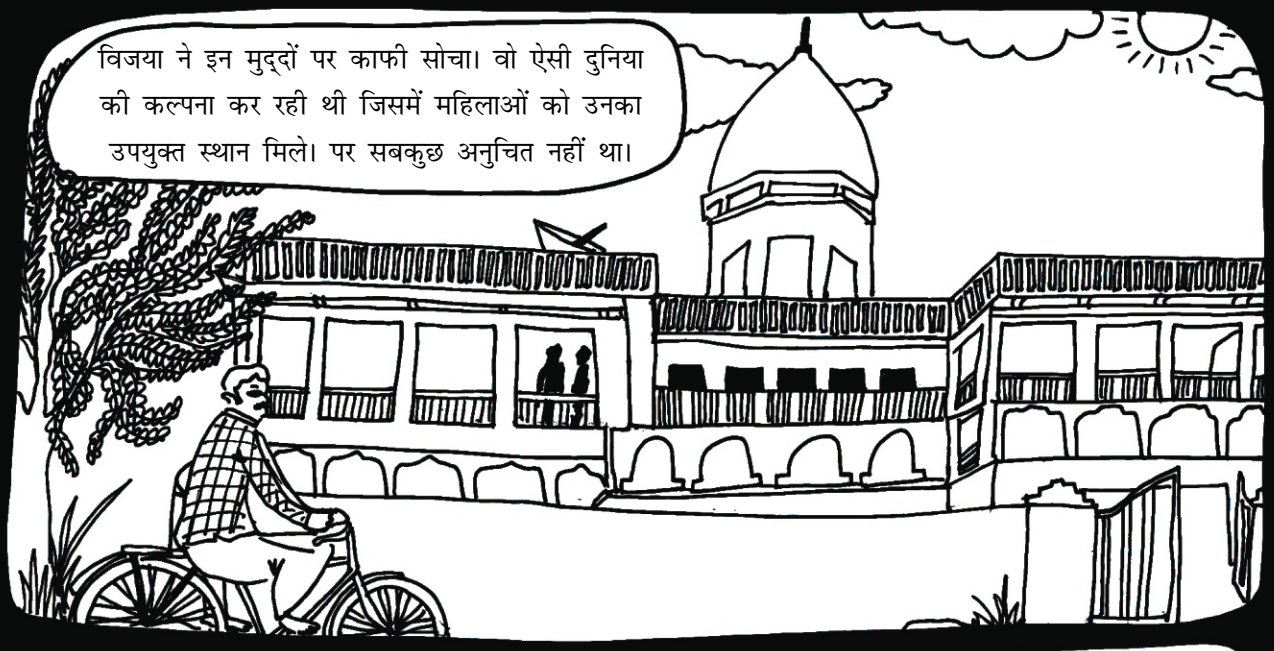

एक कर्मठ महिला अफसर सुश्री शीला रानी चुनकठ को हाल ही में पुदुकोट्टाय का कलैक्टर नियुक्त किया गया था। जिला साक्षरता समिति की अध्यक्ष और राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की प्रभारी की हैसियत से उनके सामने एक बड़ी चुनौती थी। उन्हें साक्षरता अभियान को सफल बनाना था।

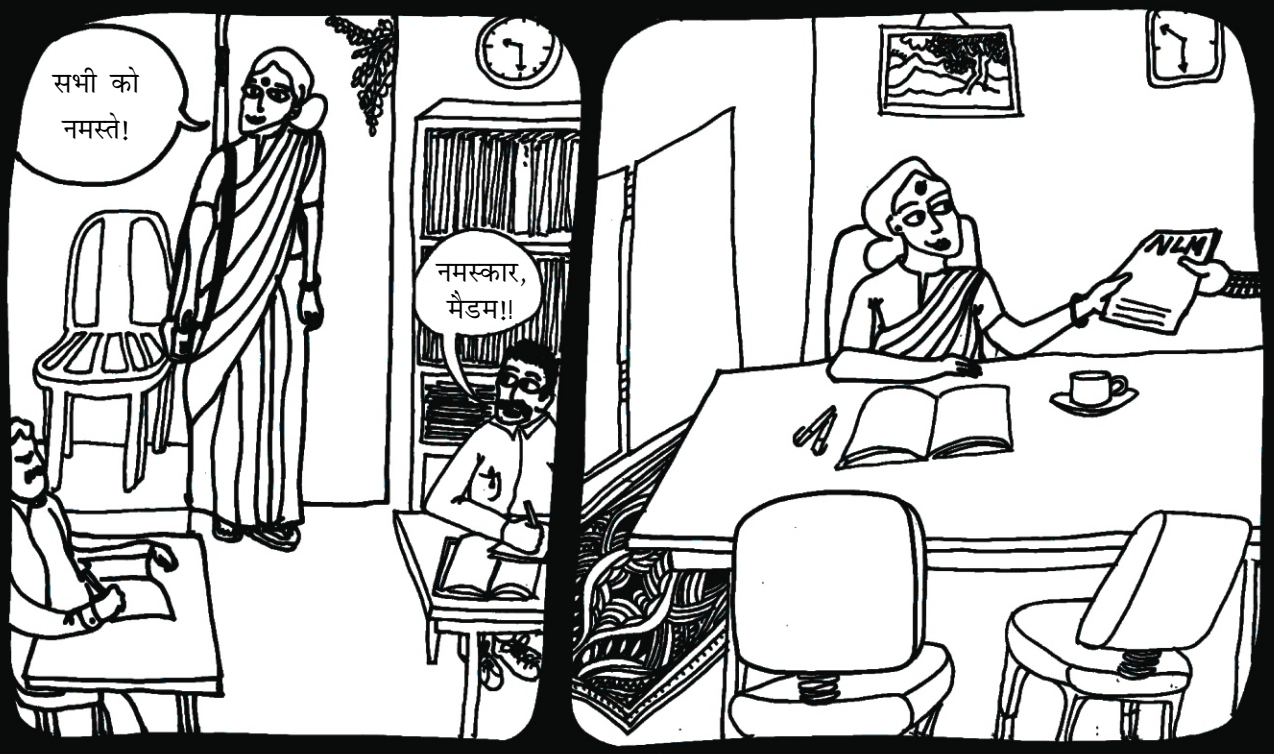

आजादी के बहुत साल बाद भी भारत में साक्षरता का स्तर बहुत कम था। दुनिया में निरक्षरों की सबसे ज्यादा संख्या भारत में थी। ऊपर से संचालित सरकारी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम केवल कागजों पर ही दौड़ते थे।

1980 में सरकार ने कई स्वयंसेवी संस्थाओं और लोकविज्ञान संगठनों की सहायता से साक्षरता मिशन में प्राण फूंकने की कोशिश की थी।

इन संगठनों के कार्यकर्ता साक्षरता के लिए बड़ी संख्या में लोगों को संगठित कर पाए।

1989 में केरल शास्त्र साहित्य परिषद की मदद से केरल का एर्नाक्युलम जिला भारत में पहला सम्पूर्ण साक्षर जिला बना।

अक्षरा केरलम
से केरल भारत का पहला संपूर्ण साक्षर राज्य बना।

इससे प्रेरित होकर भारत ज्ञान विज्ञान समिति (बीजीवीएस) ने पुदुकोट्टाय में संपूर्ण साक्षरता अभियान शुरू किया। जानेमाने शिक्षाविद् प्रो वी बी अथरेया बीजीवीएस के राज्य स्तरीय समन्वयक बने।

उन्होंने स्वंयसेवी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और प्रिंसपलों को संगठित किया।

उन्होंने रोटरी, लायन्स धार्मिक संगठनों, बैंक अफसरों को भी इस मिशन में जोड़ा।

ब्राजील के शिक्षाविद् पॉलो फ्रेरे ने 30 दिनों में भूमिहीन किसानों और खेतिहर मजदूरों को लिखना-पढ़ना सिखाया था! नवसाक्षरों की किताबें फ्रेरे के क्रांतिकारी तरीके से लिखी गयीं।

'भ' अक्षर 'भालू' नहीं बल्कि 'भूख' बना
'स' अक्षर 'सेब' नहीं बल्कि 'सूद' बना।।

क्योंकि नई किताबें गरीबों के जीवन को प्रतिबिम्बित करती थीं इसलिए वे नवसाक्षरों की कल्पना को नई उड़ान दे पायीं।

शीला रानी ने साक्षरता अभियान में साइकिल सवारी भी जोड़ी।

बीजीवीएस को कलैक्टर शीला रानी में एक अच्छा साथी मिला। एक संवेदनशील अफसर के नाते उन्होंने इस चुनौती के लिए सरकारी मशीनरी को दुरुस्त किया। उनका नारा था:

एक लड़के को पढ़ाने से केवल एक पुरुष सीखता है। पर एक लड़की को पढ़ाने से पूरी पीढ़ी शिक्षित होती है।

जिले की साक्षरता सर्वे दिल दहलाने वाली थी...

बीजीवीएस ने एक गैर-क्रांतिकारी माहौल में भी व्यापक साक्षरता अभियान चलाकर दिखाया। इसके लिए उन्होंने लोगों की जन्मजात अच्छाई और स्वेच्छा को सामुदायिक भलाई के लिए इस्तेमाल किया। उससे ज्ञान का प्रकाश (आरिवोली इयक्कम) कार्यक्रम शुरु हुआ - जो जात-पात, धर्म और अन्य सांप्रदायिक बाधाओं से मुक्त था।

सैकड़ों गांवों ने आरिवोली की गतिविधियों को समर्थन दिया। कभी अनपढ़ लोगों ने गीत-गाने लिखे और मौके पर खड़े होकर प्रेरक भाषण दिए।
पढ़ाई शुरु होने से आंदोलन को बल मिला और उसकी विश्वस्नीयता और साख बढ़ी। धीरे-धीरे बात फैली जिसने अन्य स्वयंसेवकों को आकर्षित किया।
उनका नारा सरल था:
एक इंसान, दस को पढ़ाए

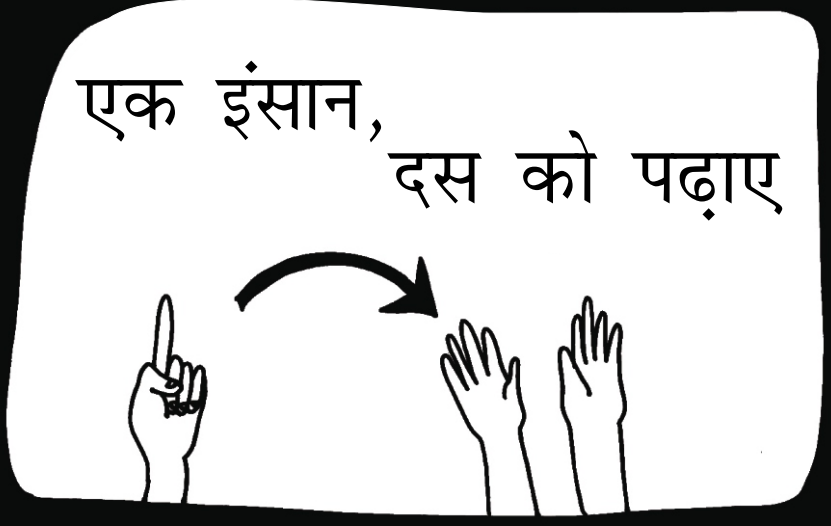

उस शाम जब विजया और रवि खाना खाने बैठे तो माहौल में तनाव था।
कुछ खबर विजया?
नहीं।
क्या महिलाएं किसी तरह से इन अत्याचारों को रोक सकती हैं?
अमीना और मुझे अगर स्कूल से नहीं निकाला गया होता तो शायद इस तरह के अपराध नहीं होते।
स्कूल में हमारी टीचर कहती थीं:
'शिक्षा में तुम्हारे जीवन को बदलने की शक्ति हैं।'
माफ करना विजया। कितना अच्छा होता अगर तुम और अमीना स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पातीं।
अम्मा-अप्पा ने जो ठीक समझा वही किया।
महिला होने के नाते हमें अपने नसीब को स्वीकार करना चाहिए। यह किसी एक की गल्ती नहीं है। पर हमें अपना संघर्ष जारी रखना चाहिए।
तुम दुखी नहीं हो विजया, इससे मैं खुश हूं।

उस रात दो महिलाएं, औरतों की दयनीय स्थित के बारे में सोचती रहीं।
क्या वे इस परिस्थिति को किसी तरह बदल सकती थीं?

अगले दिन शीला रानी ने साक्षरता अभियान की ठोस योजना बनाने के लिए एक मीटिंग बुलाई।
मैडम, प्रोग्राम में काफी सम्भावना लगती है।
बीजीवीएस ने पहले ही कार्यक्रम की रूपरेखा और उसके लिए नींव तैयार की है।
पर अभी हमें इस अभियान के क्रियांवन के लिए प्रेरित आदमियों और लड़कों की एक फौज की जरूरत है।
हमें जल्दी कुछ करना पड़ेगा!
लड़कों के स्कूल के हेडमास्टर मेरे अच्छे परिचित हैं। मैं उनसे विनती करके बड़ी कक्षाओं के कुछ लड़कों को उन गांवों में पढ़ाने के लिए भेजूंगा जहां साक्षरता की दर बहुत कम है।
इस कार्य में हमें समाज के सभी वर्गों को हिस्सेदार बनाना होगा। हमें पढ़ाई छोड़ने वाले लोगों की संख्या भी घटानी होगी।

जिले के सबसे दूर-दराज के इलाकों में महिलाओं की साक्षरता दर बहुत कम है। हमें महिलाओं की समस्याओं - भेदभाव, निरक्षरता, स्कूल छोड़ने, कुपाषण आदि मुद्दों पर आंदोलन को आधारित करना चाहिए। हमारा अभियान महिला-केंद्रित होना चाहिए।
पढ़ने-लिखने से महिलाओं को जरूर बल मिलेगा। इसलिए हमें महिलाओं को प्रेरित और संगठित करना चाहिए।
परन्तु महिलाएं तो साइकिल चला नहीं सकतीं। फिर वे दूर-दराज के गांवों में कैसे जाएंगी?
हम महिलाओं को साइकिल चलाना सिखाएंगे। मर्द स्कूटर चलाते हैं; औरतें पीछे बैठती हैं। लड़के फिर भी छोटी उम्र में ही साइकिल चलाना सीख जाते हैं। पर लड़कियों के साथ ऐसा नहीं होता है। गतिशीलता के अभाव में औरतें, पुरुषों पर आश्रित हो जाती हैं। इससे उनके सम्मान को ठेस पहुंचती है और उनका आत्म-विश्वास घटता है। लड़के साइकिल चलाते हैं; लड़कियां पैदल चलती हैं।
महिलाएं साइकिल नहीं चला सकतीं - हमें इस मिथक को तोड़ना है। हम साक्षरता अभियान में पढ़ने-लिखने के साथ-साथ महिलाओं को साइकिल चलाना भी सिखाकर उन्हें गतिशील बनाएंगे।
आजादी
सीखने की इच्छा
गतिशीलता
आत्मविश्वास

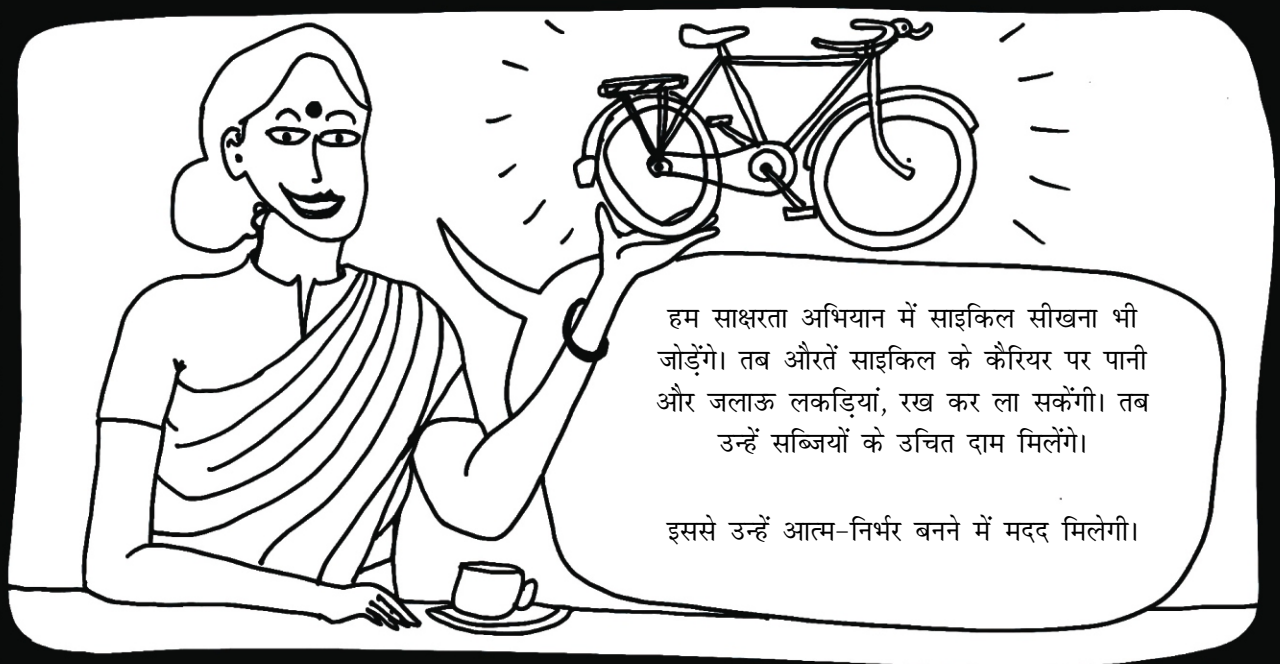
हम साक्षरता अभियान में साइकिल सीखना भी जोड़ेंगे। तब औरतें साइकिल के कैरियर पर पानी और जलाऊ लकड़ियां, रख कर ला सकेंगी। तब उन्हें सब्जियों के उचित दाम मिलेंगे।
इससे उन्हें आत्म-निर्भर बनने में मदद मिलेगी।

पुदुकोट्टाय की महिलाओं को साइकिल चलाने में बहुत मजा आएगा। इससे जाति और वर्ग के बंधन टूटेंगे। साइकिल चलाने से उन्हें पढ़ाई में भी बहुत आनंद आएगा।
हम देखेंगे!

साइकिल की क्रांति ने अपना रंग दिखाया! जल्दी ही स्कूल की छात्राओं ने, मेहनतकश पत्थर खदान में कार्यरत महिलाओं ने साइकिलें चलानी शुरू कीं। वे न केवल सड़क पर साइकिल चला रही थीं परन्तु एक उज्जवल भविष्य के पथ पर आगे बढ़ रही थीं।
TRRRING!

अंधकार से प्रकाश की ओर

साक्षरता अभियान का एक लोकप्रिय नारा:

आज चांद पे भी
इंसान के पैर की छाप है
लानत है उन पे जो
अभी तक अंगूठा छाप हैं।

NLM
राष्ट्रीय साक्षरता मिशन

1. साक्षरता

2. अंकों की सीख

खदान में काम करने वाली एक महिला मजदूर ने कहा:
'साइकिल चलाना सीखने से मैंने लिंग, आयु, जाति और वर्ग के बंधन तोड़े हैं। एक गरीब दलित परिवार की औरत की साइकिल छूने तक की हिम्मत नहीं थी, उसे सड़कों पर चलाने की बात तो दूर रही। अब मैं ठेकेदार से बराबरी की शर्तों पर बात कर सकती हूं और उसके सामने साइकिल चला सकती हूं।

3. कार्यक्षमता

4. चेतना

5. गतिशीलता

संपूर्ण साक्षरता अभियान की सफलता के निम्न कारण थे:

1 योजना बनाने वालों की उसके प्रति प्रतिबद्धता।
2 सीखने वालों और समुदाय की भागीदारी।
3 स्वंयसेवकों की सेना।
4 निर्णय लेने की प्रक्रिया में लचीलापन।
5 निश्चित समय सीमा में समापन।

भारत में साइकिल हमेशा से आम लोगों के यातायात का साधन रही है। लोग साइकिल पर अनाज के बोरे, जलाऊ लकड़ी, पानी के हंडे, दूध के कनस्तर ढोते रहे हैं। अक्सर पूरा परिवार साइकिल पर यात्रा करता है।
BICYCLE
THE TRUE HERO
अमरीका में महिला मुक्ति आंदोलन के दौरान साइकिल स्वावलम्बन और आजादी का प्रतीक था।
ऊर्जा-बचत के मामले में साइकिल दुनिया की सबसे कुशल मशीन है। उसमें कोई तेल, कोयला जैसा ईंधन खर्च नहीं होता है और न ही कोई जहरीली गैसें बाहर निकलती है। न ही साइकिल कोई 'कार्बन-प्रिंट' छोड़ती है।
साइकिल किसी भी तरह के पथ पर चल सकती है - खेतों, पगडंडियों और छिछले नालों में भी। साइकिल से अच्छी कसरत होती है। साइकिल न्यूनतम रख-रखाव के साथ अधिकतम लाभ पहुंचाती है।
कम दूरी की यात्रा के लिए साइकिल सबसे उपयुक्त साधन है। तब आपको बसों का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।
साइकिल किसी भी तरह की सड़क पर चल सकती है। वो कच्ची सड़कों पर, नदी-नालों को पार कर सकती है। साइकिल अच्छी सेहत का राज है। साइकिल की देखरेख कम है, लाभ अनेक हैं। कम पुर्जों के कारण साइकिल में टूट-फूट की मरम्मत भी करना आसान है। आपातकालीन स्थिति में हल्की साइकिल को कंधे पर लादकर भी ले जाया जा सकता है।

जल्द ही क्लासें नवसाक्षरों के घरों से 200–मीटर दूरी पर लगने लगीं। कार्यकर्ता 10–15 छात्रों को हफ्ते में 5–6 बार रात को 90–मिनट के लिए पढ़ाते। यह कक्षाएं घरों, मंदिरों, आंगनों, मस्जिदों, गौशालाओं में लगतीं। कभी–कभी लोग गली की बत्ती के नीचे, या मिट्टी की तेल की लालटेन लेकर पढ़ते।
एक इंसान, दस को पढ़ाए +
अरिवोली इयक्कम :
नवसाक्षर वसंथा ने इन कक्षाओं के बारे में यह टिप्पणी की:
'मुझे पढ़ने की गहरी लत लग गई। जो कुछ भी सामने आता मैं उसे पढ़ती – दुकानों के बोर्ड और इश्तहार। जिस अखबार में मेरा सामान लिपटा होता उसे भी मैं पूरा पढ़ती।'

एक दिन साक्षरता शिविर में एक खुफिया आया। वो कक्षा की दीवार के ऊपर से झांक रहा था। इतनी सारी महिलाओं को लिखते-पढ़ते देख उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।
विजया!!
वाह! चलो महिलाओं के लिए कक्षाएं शुरू तो हुईं! रवि की आंखों में चमक थी। वो विजया को यहां जरूर लाएगा। वो बेहद खुश होगी।
सुनो, विजया!
अरे!
विजया, मेरे साथ तुरन्त चलो, जल्दी!

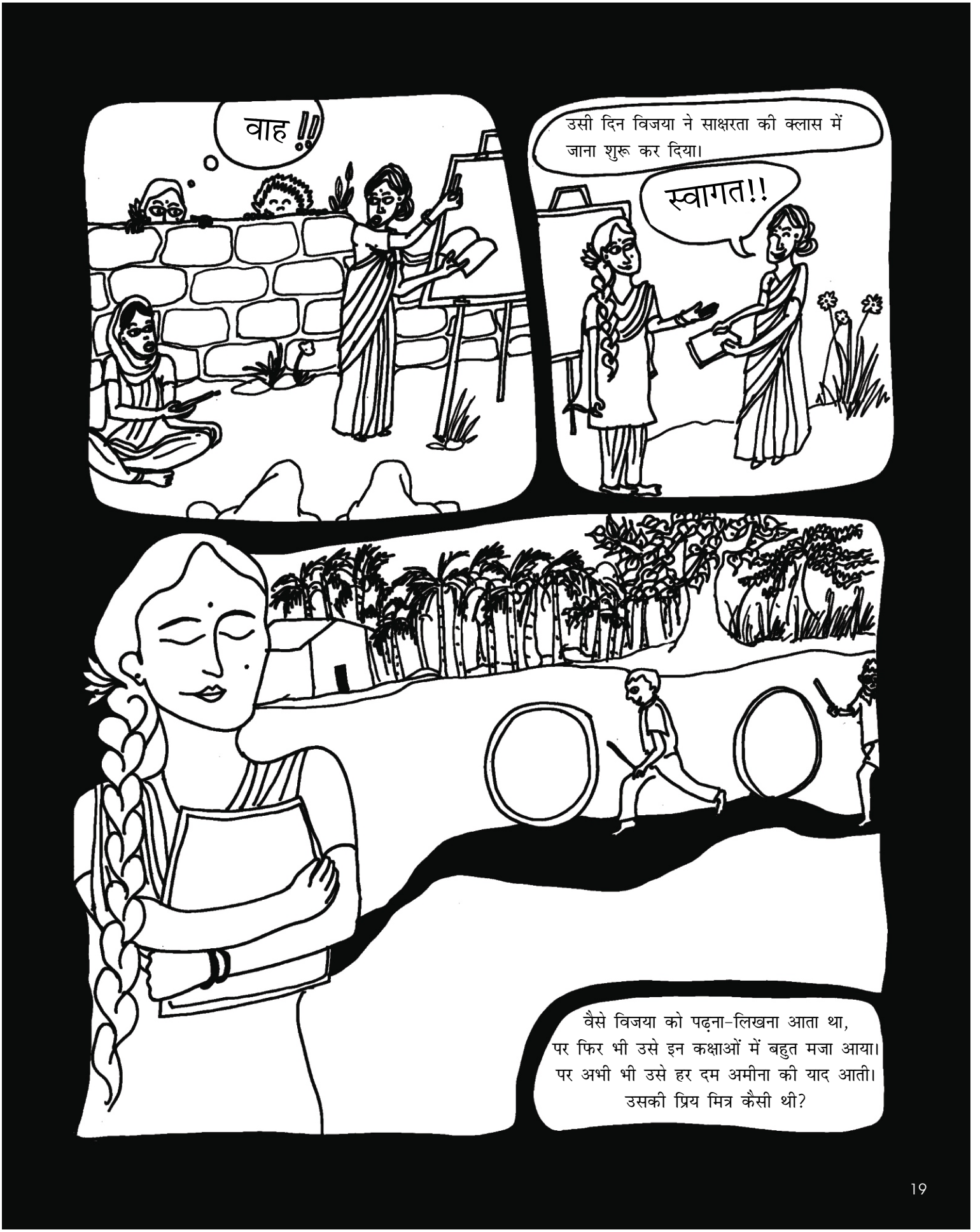
वाह !!
उसी दिन विजया ने साक्षरता की क्लास में जाना शुरू कर दिया।
स्वागत!!
वैसे विजया को पढ़ना-लिखना आता था,
पर फिर भी उसे इन कक्षाओं में बहुत मजा आया।
पर अभी भी उसे हर दम अमीना की याद आती।
उसकी प्रिय मित्र कैसी थी?

साइकिल सवारी को लेकर कई गीत-गाने लिखे गए।

'साइकिल चलाना सीखो बहनों,
जिंदगी का चक्का घुमाओ बहनों
समय की धार बदली है तेजी से
औरत साइकिल चलाए, मर्द पीछे बैठे।

इससे औरतें तो खुश थीं, पर मर्द नहीं। साइकिल सवार महिलाओं से मर्दों ने उल्टी-सीधी बातें कहीं और उन्हें गालियां दीं।

मुझे डर लगा, पर मजा भी बहुत आया!

उनकी कैसे हिम्मत?

मर्दों को अपनी सत्ता डगमगाती लगी और वो बहुत झल्लाए। महिलाएं ऐसी बेहूदा चीजें क्यों कर रही थीं?

दरअसल मर्द सबसे ज्यादा दुखी इस बात से थे कि महिलाएं उनकी मदद के बिना ही साइकिल सीख रही थीं।

मैं साइकिल सवार औरतों पर मिट्टी फेंकूंगा!

मर्दों ने औरतों का मजाक उड़ाया और उनपर तानाकशी की।

पर इन सब धमकियों के बावजूद औरतें साइकिलों के पैडल चलाती रहीं। साथ में वे गतिशीलता, सशक्तिकरण और आत्म-निर्भरता का संदेश भी फैला रही थीं।

मेरा अगला नम्बर है!

ठीक है!

रात को साइकिल अभ्यास

मर्दों के इतने विरोध और बैर के बाद साक्षरता कार्यकर्ताओं ने साइकिल सीखने की कक्षाएं रात को शुरू कीं। रात को क्योंकि खिल्ली उड़ाने के लिए बहुत कम ही मर्द होते थे इसलिए महिलाएं शांति से साइकिल चलाना सीख सकती थीं।

महिलाएं रात के समय साइकिल चलाना पसंद करती थीं क्योंकि तब उन्हें मर्दों के ताने नहीं सहने पड़ते थे।

विजया खुद भी साइकिल शिविर में भर्ती हुई। उसने यह छिपकर किया। पर एक रात उसकी मां ने उसे रात के समय चुपचाप घर से जाते हुए देखा।

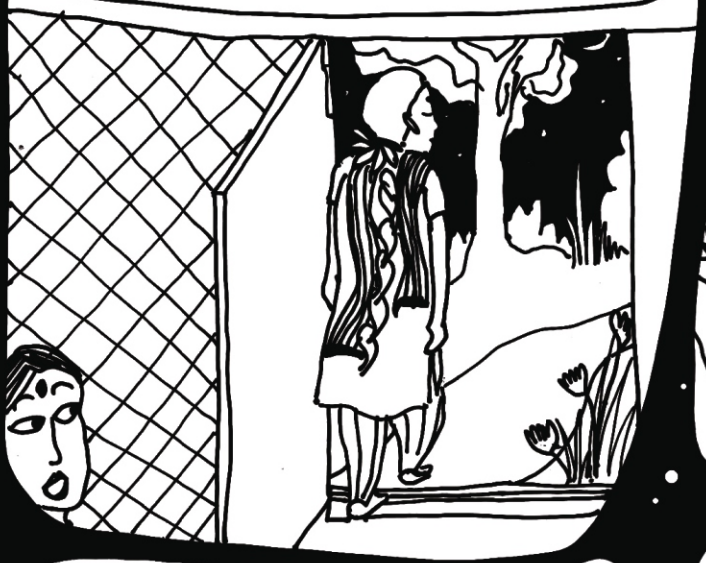

विजया की मां बेटी को रात में घर से जाते देखसहम गयीं। उनके दिमाग में तमाम बुरे विचार आने लगे। विजया की सुरक्षा के लिए एक रात उन्होंने चुपके से उसका पीछा किया...

... और जो उन्होंने देखा उस पर उन्हें यकीन नहीं हुआ। उनकी शर्मीली बेटी विजया साइकिल पर मस्ती से सवारी कर रही थी! घर वापस जाते समय उनका दिल बल्लियों उछलने लगा।

अगले दिन विजया के घर पर...

विजया कई दिनों से मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूं। शायद तुम हमारी कुछ मदद कर पाओ। मैं ताल के उस पार पत्थर खदान में काम करती हूं। वहां का ठेकेदार बहुत शोषक है।

वो हमें न्यूनतम वेतन तक नहीं देता है।

मां, मैं मदद करने की पूरी कोशिश करूंगी!

अम्मा बताओ तो?

पिछले हफ्ते ठेकेदार ने हमारे साथी सेंथिल को बुलाकर जबरदस्ती एक कागज पर उससे अंगूठे का ठप्पा लगवाया। अनपढ़ होने के कारण सेंथिल कागज पर क्या लिखा था उसे पढ़ नहीं पाया।

उस कागज से अब सेंथिल ठेकेदार का बंधुआ मजदूर बन गया है! ठेकेदार उसके साथ एक गुलाम जैसा सलूक करता है।

अम्मा उनकी मदद करने के लिए तुम्हें खुद पढ़ना-लिखना सीखना होगा।

मुझे साइकिल सवारी का भी पता है।

कैसे?

पिछली रात मैंने छिपके तुम्हारा पीछा किया था और मैं बहुत प्रभावित हुई।

तुम वाकई में शिक्षित और समझदार हो।

अम्मा आपका बहुत शुक्रिया। मुझे लगा आप परेशान होंगी। पढ़ना-लिखना सीखना वाकई जादुई है। मैं तुम्हें वहां पर कल ले जाऊंगी।

और फिर विजया की मां भी नवसाक्षरों की फौज में भर्ती हो गई।

शीला रानी ने पत्थर खदान ठेकेदार के बारे में भयंकर कहानियां सुनीं थीं। उन्होंने एक नई स्कीम की योजना बनाई जिसके तहत महिला समूह खुद खदान का ठेका ले सकते थे और ठेकेदार को वहां से हटा सकते थे।

इन महिलाओं को वाकई मदद की जरूरत है।

खदान मजदूर बहुत पिछड़े हालातों में काम करते थे। उन्हें वेतन देर से मिलता था। समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम तनख्वाह मिलती थी।

राजनैतिक छत्रछाया के कारण, ठेकेदार के खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाता था।

पर कलैक्टर के आदेश से महिला मजदूर बहुत खुश हुयीं।

जिन्दाबाद!

हमें पढ़ना-लिखना सीखना होगा!

लो, कलैक्टर का आर्डर पढ़ो।

कुछ कार्यकर्ताओं ने महिलओं से फार्म भरवाकर कोआपरेटिव सोसाइटी शुरू करने में मदद की।

पहले समूह की अगुवाई विजया की मां ने की। इस समूह ने खनन के लिए पुदुकोट्टाय में सरकारी जमीन का एक टुकड़ा पट्टे पर लिया...

... और उन्होंने वहां बहुत अच्छा काम किया। साक्षरता की कक्षाओं में अपने अधिकारों के बारे में जानते थे।

खदान मजदूरों ने खुद को ठेकेदार के चंगुल से मुक्त किया था।

पहले वो खुद नौकरी तलाशते थे पर अब वो औरों के लिए नौकरियां पैदा कर रहे थे। पढ़ना-सीखना उनके लिए अभी भी मुश्किल था, पर साइकिल चलाने में उन्हें बहुत मजा आता था।

अनेकों मुस्लिम महिलाएं अरब देशों से भेजे पतियों के पत्र नहीं पढ़ पाती थीं। कुरान पढ़ना सीखने के बहाने इन महिलाओं को भी साक्षरता क्लासेस में भेजा गया।

नुक्कड़ नाटकों द्वारा साक्षरता का संदेश बहुत प्रभावशाली तरीके से लोगों तक पहुंचाया गया। लघु-नाटकों, जलसों, मेलों द्वारा लोगों में नियमित रूप से चेतना फैलाने का काम चलता रहा।

राजू, यह क्या लिखा है? क्या तुम्हें पता है?

नहीं! मुझे नहीं पता। बस ठेकेदार ने मुझसे यहां दस्तखत करने को कहा!

अगर तुम पढ़ पाते तो तुम्हें पता चलता कि यह कागज तुम्हें ठेकेदार का बंधुआ मजदूर घोषित करता है!

पढ़ो-लिखो और अपने जीवन को बेहतर करो!

रोजमर्रा का शोषण दिखाने की वजह से ये नाटक बहुत लोकप्रिय हुए।

लोगों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करने में भी नुक्कड़-नाटक बहुत सफल हुए।

हम लोग पढ़ना-लिखना क्यों सीखें? हमारी जिंदगी में तमाम झंझट हैं फिर हम इन बेकार की बातों में अपना समय क्यों व्यर्थ करें? हमें पढ़-लिख कर कोई सरकारी नौकरी थोड़ी न करनी है?

शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी नौकरी मिलना या ज्यादा धन कमाना नहीं है। शिक्षा से आप अपने जीवन को बेहतर समझ कर, विश्लेषण के बाद सही कदम उठा पाएंगे। उससे आपकी जिंदगी बेहतर बनेगी!

देश के नियम-कानून पढ़कर समझने के बाद आप शोषण से खुद को सुरक्षित रख सकेंगे।

शिक्षा मुक्ति का हथियार है।

कुछ मर्द तो औरतों द्वारा साइकिल चलाना बर्दाश्त नहीं कर सके। जल्द ही माहौल बहुत गर्मा गया। मर्दों को महिलाओं की आजादी रास नहीं आई। औरतें उनकी पैतृक सत्ता को चुनौती दे रही थीं। उनकी कैसे हिम्मत हुई?

उसने मेरे आज्ञा कैसे नहीं मानी? वो अपने आप को क्या समझती है?वो साइकिल पर गुंडों जैसे नहीं घूम सकती है।

अब मुझे उसे असलियत बतानी ही होगी?समाज के बड़े-बूढ़े क्या कहेंगे?रात में औरत की अकेले साइकिल सवारी निर्लज्जता की हद है। यह शर्मनाक हरकतें बंद होनी चाहिए!

क्या वो 'स्वतंत्रता' का मतलब समझती है? सच तो यह है कि मैं रोज उसे मंदिर तक खुद छोड़कर आता हूं।

महिलाओं को पढ़ना-लिखना क्यों सीखना चाहिए?क्या उनके पति मेहतन की कमाई घर नहीं लाते?

सिर्फ एक व्यक्ति साइकिल सीखने वाली महिलाओं से खुश था। वो पुदुकोट्टाई में अकेली साइकिल दुकान का विक्रेता था - श्री आर मंजूनाथ।

महिलाओं को स्वतंत्र होना चाहिए। उन्हें साइकिल पर अकेले इधर-उधर जाना चाहिए! तभी हमारा समाज प्रगति करेगा!

विजया के घर में धीरे-धीरे करके परिवर्तन हुआ। आजादी चखने के बाद विजया की मां कुछ आगे भी करना को उत्सुक थीं।
मैं उनसे बात करना चाहती हूं। क्या मैं उनके भोजन समाप्त करने का इंतजार करूं?
देखिए, मैं आपसे कुछ मांगना चाहती थी – एक विशेष चीज।
अलागूमाई, तुम क्या चाहती हो? बताओ ना?
अच्छा...
विजया के पिता एक समझदार व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत सोचने के बाद उत्तर दिया:
साइकिल खरीदने की हमारी हैसियत नहीं है। रवि के स्कूल की फीस के अलावा हमें विजया की शादी के लिए भी धन जुटाना है। मैं माफी चाहता हूं।
मुझे पता है कि हम अभी इस मंहगी चीज को नहीं खरीद पाएंगे।

मर्दों के तानों के बावजूद महिलाएं साइकिल चलाती रहीं। पुदुकोट्टाई में एक लाख से अधिक लड़कियों और औरतों ने साइकिल चलाना सीखी।

यूनिसेफ ने इस अद्भुत प्रगति से प्रभावित होकर ग्रामीण महिला स्वास्थ्य कर्मियों को 50 ऑटोसाइकिल भेंट कीं। अंततः महिलाओं के जीवन का रुका पहिया अब घूमने लगा था!

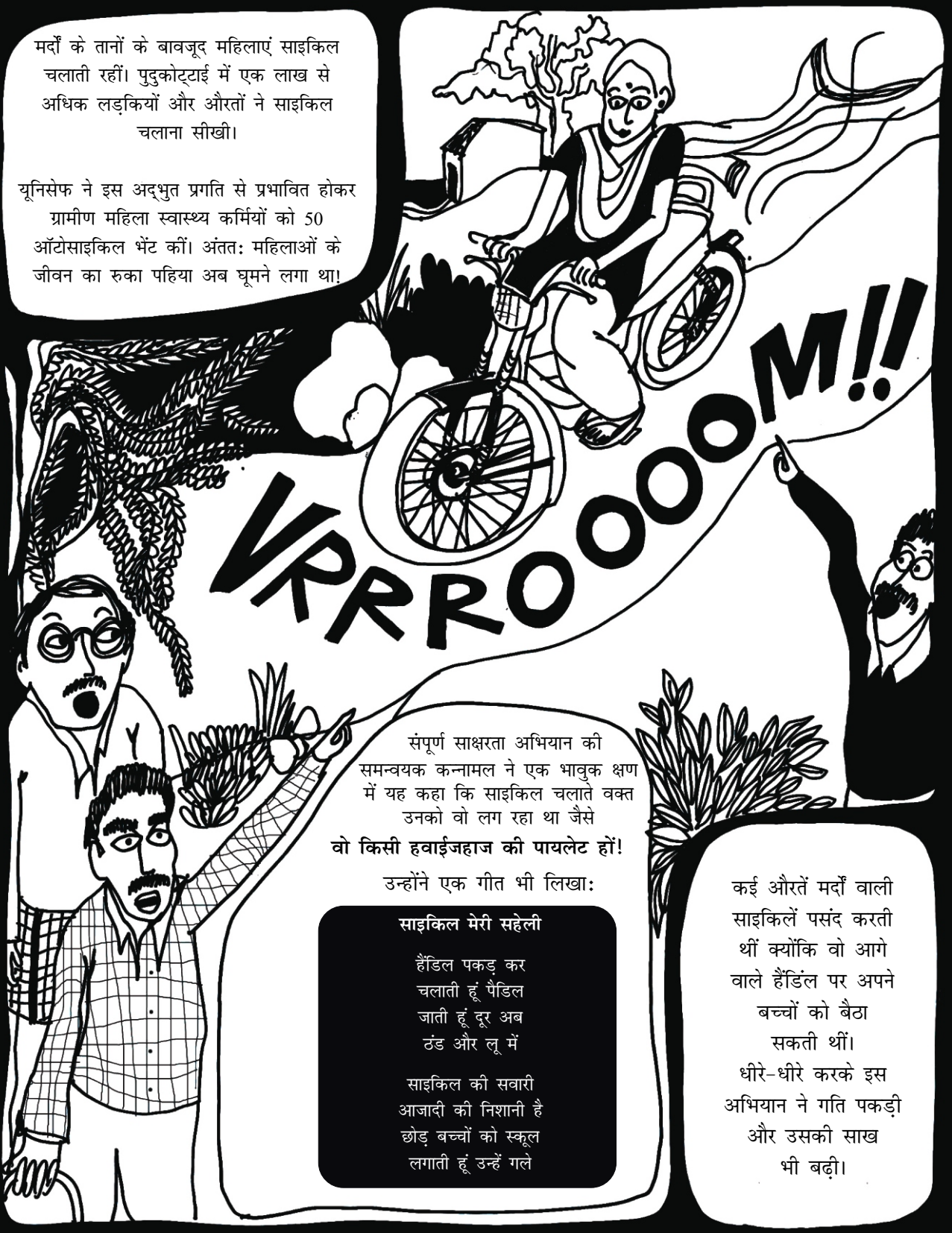

संपूर्ण साक्षरता अभियान की समन्वयक कन्नामल ने एक भावुक क्षण में यह कहा कि साइकिल चलाते वक्त उनको वो लग रहा था जैसे **वो किसी हवाईजहाज की पायलेट हों!**

उन्होंने एक गीत भी लिखा:

साइकिल मेरी सहेली

हैंडिल पकड़ कर
चलाती हूं पैडिल
जाती हूं दूर अब
ठंड और लू में

साइकिल की सवारी
आजादी की निशानी है
छोड़ बच्चों को स्कूल
लगाती हूं उन्हें गले

कई औरतें मर्दों वाली साइकिलें पसंद करती थीं क्योंकि वो आगे वाले हैंडिंल पर अपने बच्चों को बैठा सकती थीं।
धीरे-धीरे करके इस अभियान ने गति पकड़ी और उसकी साख भी बढ़ी।

खुशी की खोज

अब मैं अपने बच्चों को साइकिल पर बैठाकर उन्हें पूरा शहर घुमा सकती हूं! साइकिल की मदद से मैं कम समय में अधिक काम कर सकती हूं!

मैं सब्जियों को दूर स्थानों पर बेंचकर ज्यादा कमाई कर सकती हूं।

जब से मैंने साइकिल चलाना शुरू किया है तबसे मेरा पिता मुझ से बराबरी और इज्ज़त से पेश आता है।

मुझे जल्द साइकिल का अभ्यास खत्म करना चाहिए क्योंकि साक्षरता क्लास घंटे भर में शुरू होने वाली है!

क्या मैं भी चलूं? मैं भी वहां दाखिला लूंगी।

जल्द ही साक्षरता कक्षाएं साइकिल सीखने का पर्याय बन गयीं। कुछ महिलाएं साक्षरता के क्लास के बाद सीधे साइकिल सीखने का अभ्यास करने आती थीं।

साइकिल सीखने के बारे में मुझे कुछ और बताओ? क्या कोई भर्ती हो सकता है? फीस कितनी है? बचपन में मेरे भाई पिताजी की साइकिल चलाते थे। मुझे बचपन से लगा कि मैं कभी साइकिल चलाना नहीं सीख पाऊंगी। पर मेरे दिल में साइकिल सीखने की तमन्ना है।

साइकिल सीखने ने साक्षरता की कक्षाओं को एक नया रंग दिया। एक बार औरतों की भूख जगने के बाद वे और बहुत कुछ मांगने लगीं। एक साल में चौथाई से ज्यादा ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल चलाना सीखी!

हममें खरीदने की ताकत नहीं है, परन्तु...

बहुत सी महिलाएं साइकिलें खरीदने में असमर्थ थीं। इसलिए मंजुनाथ साइकिल स्टोर से साइकिलों को घंटे के हिसाब से किराए पर देना शुरू किया। मुड़े फ्रेम वाली महिलाओं की साइकिलों के अभाव में औरतों ने मर्दों वाली साइकिलों पर ही सवारी सीखी। अक्सर किराए पर लेने के बाद दो-तीन महिलाएं उस पर इकट्ठे साइकिल चलाना सीखतीं। इससे पैसे बचते।

शीला रानी ने कई सामाजिक संस्थाओं - रोटरी, लायन्स क्लब, धार्मिक समूहों आदि को साइकिलें दान देने के लिए प्रेरित किया और बैंकों को साइकिल कर्ज देने के आदेश दिए। उन्होंने साइकिल निर्माताओं से पुदुकोट्टाई में तुरन्त हजारों साइकिलें भेजने की अपील की।

इस पूरे अभियान में केवल एक महिला नहीं शामिल हो पाई थी। एक शाम विजया को बाजार में अपनी प्रिय सहेली अमीना दिखाई दी। अमीना की हालत बेहद खराब थी।

मैं तुम्हें देख कर बेहद खुश हूं। चलो, पहले घर चलो और पेट भरके अच्छा खाना खाओ! भगवान जाने हमने तुम्हें कितनी बार याद किया है!

तभी मंजुनाथ साइकिल स्टोर में रवि ने अपने पिताजी को देखा। वो दुकान के मालिक से कुछ बातचीत कर रहे थे।

कुछ देर बाद सब लोग साथ-साथ घर पहुंचे...
अम्मा!
अम्मा! अमू को देखो!!
नई साइकिल? और अमीना?? यह तो गजब की बात है!!
देखो, अलुगमाई!
नई साइकिल!!!
ताली! ताली! ताली!
क्या तुम्हें पसंद आई? क्या तुम्हें यही साइकिल का मॉडल चाहिए था?
मुझे बेहद पसंद आई! पर तुम पैसे कहां से लाए?
मंजूनाथ मेरा पुराना मित्र है। हम उसे पैसे किश्तों में चुका देंगे!
मेरे पास धन्यवाद कहने के लिए शब्द नहीं हैं! बहुत शुक्रिया!

जब विजया की मां साइकिल को निहार रही थीं तब विजया और अमीना एक-दूसरे से बातचीत कर रही थीं।

विजया, मुझे अपने पति के साथ रहना बेहद कष्टदायक रहा। मेरे पति बेटा चाहते थे। अल्ट्रासाउंड रिर्पोट मिलते ही वो गर्भपात कराने के लिए मुझे अस्पताल घसीट कर ले गया।

हे भगवान!

हे भगवान, विजया जो हुआ उससे मैं बेहद दुखी हूं! छोटी नादान बच्ची बिना बात के कत्ल हो गई! तब से मैं सुधबुध खोकर गांव में पागलों जैसी घूम रही हूं। तुम्हें देखकर पहले तो मैं एकदम सुन्न हो गई पर फिर वही दुखदायी यादें मुझे फिर से सताने लगीं। मैं क्या करूं विजया, तुम्हीं बताओ?

चुप रहो। फिक्र मत करो। तुम हमारे साथ सुरक्षित हो। मैं तुम्हारा बाल तक बांका होने नहीं दूंगी।

आज रात को मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगी। वहां पर तुम्हारा दिल एकदम खुश हो जाएगा।

वाह!

क्या बात है, सकीना!

टन! टन!

स्कूल से निकाले जाने से पहले अमीना बहुत ही बुद्धिमान छात्र थी। एक बार दुबारा अमीना के दिल में पढ़ने की उमंग पैदा हुई।

अमीना, राष्ट्रीय साक्षरता अभियान हमारे पूरे जिले में पढ़ाई की क्लास के साथ-साथ साइकिल चलाने की ट्रेनिंग भी दे रहा है। इस कार्यक्रम का नाम है सम्पूर्ण साक्षरता अभियान। मैंने साक्षरता कक्षाओं में भर्ती हुई हूं और मेरे लिए वो एक बेहद सुखद अनुभव रहा है! मुझे ऐसा लगा जैसे मैं स्कूल वापिस जाकर नई चीजें सीख रही हूं!

हमारे छोटे शहर में इस तरह का काम पहले कभी नहीं हुआ। मैं साक्षरता कक्षाओं को जरूर देखना चाहूंगी। और क्योंकि मुझे पहले से ही लिखना-पढ़ना आता है इसलिए मैं इस अभियान में सहायता करूंगी।

उसी हफ्ते अमीना साक्षरता कक्षाओं में भर्ती हो गई। वहां वो सीखने के साथ-साथ पढ़ाने भी लगी। जल्द ही उसकी सारी थकान लुप्त हो गई।

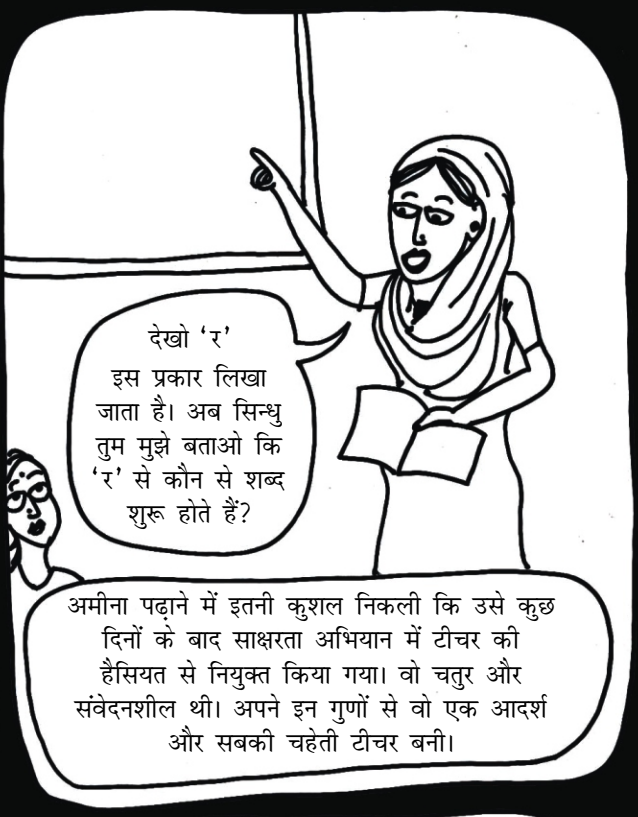

अमीना पढ़ाने में इतनी कुशल निकली कि उसे कुछ दिनों के बाद साक्षरता अभियान में टीचर की हैसियत से नियुक्त किया गया। वो चतुर और संवेदनशील थी। अपने इन गुणों से वो एक आदर्श और सबकी चहेती टीचर बनी।

महिला-जनसंघर्ष ने अमीना को महिलाओं के उत्पीड़न के बारे में बोलने की हिम्मत दी। फिर वो इस आंदोलन की पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गई।

अमीना

शीला रानी, सरकारी अफसर होने के बावजूद गरीबों और महिलओं की मसीहा साबित हुयीं। 2008 में प्रधानमंत्री ने उन्हें देश के सर्वश्रेष्ठप्रबंधक का पुरुस्कार दिया।

शीला रानी

कई साइकिल रेसें आयोजित की गयीं जिनमें हजारों महिलाओं ने भाग लिया।

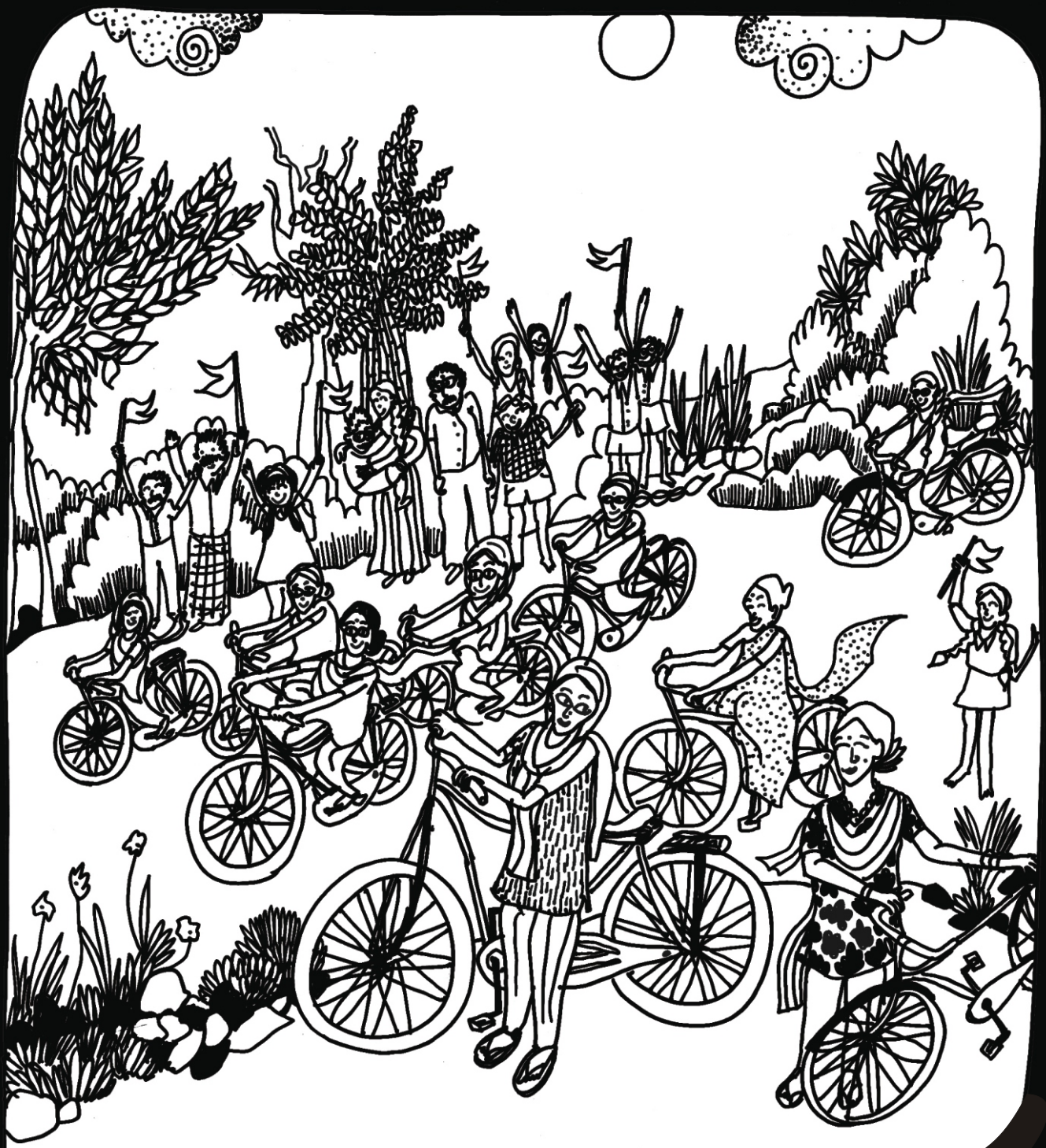

सइकिल मोर्चा
१००,०००
साइकिलों पर सवार महिलाएं

पुदुकोट्टाई की महिलाओं ने दुनिया को एक सबक सिखाया। सबसे विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने पिछड़ेपन को सुधारने का प्रयास किया। उन्होंने अपने उत्पीड़न को ललकारा और दासता के बंधनों को तोड़ा।

1991 में पुदुकोट्टाई, तमिल नाडु में एक विलक्षण प्रयोग हुआ। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अंतर्गत एक लाख से भी अधिक महिलओं ने पढ़ने-लिखने के साथ-साथ साइकिल चलाना भी सीखा। इस प्रकार का, और पैमाने का आंदोलन दुनिया में पहले कहीं नहीं हुआ। इस प्रेरक कहानी को पहली बार एक ग्राफिक नॉवेल के रूप में पेश किया जा रहा है।

अरविन्द गुप्ता ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्था (आई.आई.टी.) कानपुर से 1975 में बी.टेक. की डिग्री हासिल की। उन्होंने विज्ञान की गतिविधियों पर 20 पुस्तकें लिखी हैं, 150 पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है और दूरदर्शन पर 125 विज्ञान फिल्में पेश की हैं। उनकी पहली पुस्तक **मैचस्टिक मॉड्ल्स एंड अदर साइन्स एक्सपेरीमेन्टस** का 12 भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और उसकी पांच लाख से अधिक प्रतियां बिकीं। उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं जिनमें बच्चों में विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार का सर्वप्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार (1988) और आई.आई.टी. कानपुर का डिस्टिंगुइश्ड एलुम्नस अवॉर्ड (2000), विज्ञान के लोकप्रियकरण के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार (2008) और थर्ड वर्ल्ड एकैडमी ऑफ साइंसिस का अवॉर्ड (2010) शामिल हैं।
वर्तमान में वे पुणे में स्थित आयुका मुक्तांगन बाल विज्ञान केन्द्र में काम करते हैं। उनकी लोकप्रिय वेबसाइट arvindguptatoys.com पर खिलौनों और पुस्तकों का एक विशाल भण्डार है।

इशिता धारप एक चित्रकार और डिजाइनर हैं। उन्होंने 2012 में सृष्टि स्कूल ऑफ आर्ट डिजायन एंड टेक्नालिजी से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद से वो मुक्त रूप से ग्राफिक डिजाइन के काम कर रही हैं। उन्होने स्थानीय आर्ट गैलरी में अपने चित्रों की प्रर्दशनी भी लगाई है। उन्होंने छोटे बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाने का काम भी किया है।
वो पुणे में रहती हैं और उनके कार्य को निम्न वेबसाईट पर देखा जा सकता है :
cargocollective.com/ishitadharap